एमएसएमई में महिला उद्यमियों की धाक

घर और औद्योगिक मोर्चे पर साथ-साथ कर रहीं कदमताल

लखनऊ। नए निवेश हो रहे, नए प्लांट लग रहे, फैक्टरियां बन रहीं। एमएसएमई में नई संभावनाएं दिख रही हैं। साथ ही लखनऊ की महिला उद्यमी भी अपनी अलग पहचान बना रही हैं। घर और औद्योगिक मोर्चे पर साथ-साथ कदमताल कर रही हैं। वे अपने साथ अन्य महिलाओं के लिए भी सफलता का मार्ग भी प्रशस्त कर रही हैं। कुछ ऐसी ही महिला उद्यमियों की कहानी, उनकी जुबानी। पेश है **रोली खन्ना** की रिपोर्ट :

जुड़वा बच्चों के साथ उठाई फैक्टरी की जिम्मेदारी : मीनाक्षी उपाध्याय

राजाजीपुरम निवासी मीनाक्षी उपाध्याय कहती हैं कि पढ़ाई की थी तो लगा कि क्या काम करें। एक नई सोच बनी और मैंने काकोरी के सलेमपुर पतौरा में चिकित्सकीय उपकरण की फैक्टरी शुरू की। हालांकि उस वक्त बच्चे छोटे थे, जुड़वा होने के कारण दोहरी जिम्मेदारी उठाई। कुछ करने का जुनून था, तो फैसला कर लिया। आज मेरे पास 150 महिलाओं स्टाफ है। जो महिलाएं कई बार परिवार का कारण बताकर काम से पीछे हटती हैं, मेरा उनसे कहना है कि पहले खुद अपने पैरों पर खड़े हो तभी तो परिवार को देख पाओगी। हां, काम शुरू किया तो कम जानकारी के कारण दिक्कतें आईं थी, पर गिरते-संभलते काम सीख ही गई।

पेंट-पुट्टी तक जानती नहीं थी, आज घर बना सकती हूं : शिल्पी चतुर्वेदी

गोमतीनगर विकल्पखंड में रहने वाली शिल्पी चतुर्वेदी दस साल पुरानी उद्यमी हैं। कहती हैं कि कुछ करने की चाह थी तो उद्यमी बन गई। हम लोग रेडीमेड प्लास्टर, टाइल्स को चिपकाने वाले केमिकल आदि बनाते हैं। हमारी टीम इन उत्पादों को लेकर जागरूकता का काम करती है। सोशल मीडिया पर और वन टू वन प्रमोशन करते हैं। एक महिला जब घर से निकलती है और वह भी एकदम अलग क्षेत्र में, तो कई चुनौतियां होती हैं। मैंने भी धक्के खाए। पहले पेंट पुट्टी से आगे कुछ जानती नहीं थी, आज घर भी बना सकती हूं।

महिला उद्यमियों को आगे बढ़ाने का जिम्मा उठाया : आनंदी अग्रवाल

आईआईए लखनऊ चैप्टर की महिला विंग की शुरुआत हुई तो आनंदी अग्रवाल को उसका चेयरपर्सन बनाया गया था। वर्तमान में वे विमेन एंटरप्रेन्योर सेल की चेयरपर्सन हैं। कहती हैं कि हमारे पारिवारिक बिजनेस का एक हिस्सा जिसमें एल्युमीनियम के बर्तन बनते हैं, उसे संभालती हूं। आईआईए ने जो जिम्मेदारी दी है, उसके तहत हम लोग एमएसएमई से जुड़ी महिला उद्यमियों की पहचान कर रहे हैं। दरअसल यह पुरुष प्रधान क्षेत्र रहा है। महिलाएं काम तो बहुत करती हैं, लेकिन खुद को प्रमोट नहीं कर पातीं। हम उन्हें आगे लाने में जुटे हैं। इसके लिए एक विंग मेरठ में शुरू हो चुकी है। संभल, सहारनपुर, जौनपुर और बरेली में महिला उद्यमियों की पहचान की जा रही है।

स्टाफ से सीखे फैक्टरी के काम : मृणालिनी गुरनानी

ऑटोमोबाइल मैन्युफैक्चरिंग उद्योग को अकेले संभाल रही हैं मृणालिनी गुरनानी। कहती हैं कि पति की अपनी जॉब है। पहले फैक्टरी का काम ससुर देखते थे, फिर सेहत संबंधी कारणों से विगत चार वर्षों से जिम्मेदारी मेरे पास आ गई। तकनीकी जानकारियां नहीं थी, फिर पति की मदद से पढ़ना शुरू किया, गूगल किया। सबसे ज्यादा मुझे सिखाया मेरी फैक्टरी के स्टाफ ने। बच्चों का बोर्ड था, लेकिन उन्होंने मुझे परेशान नहीं किया, खुद अपनी जिम्मेदारी उठाई। आज घर और काम दोनों के बीच संतुलन बैठा लिया है।